संवाद

बच्चों में पढ़ने की ललक नैसर्गिक रूप से होती है। रंग-बिरंगी किताब सामने देखते ही नन्हा बच्चा उसे उठाता है, उसे उलटता-पलटता है, चित्रों से बातें करता है। यहीं से शुरूआत होती है उसके बाल साहित्य के संसार में कदम रखने की। लेकिन यही बच्चा जब स्कूली दुनिया में कदम रखता है तो पढ़ने की चाहत धीरे-धीरे कम होने लगती है। इसके कई कारण हैं, जिनमें से एक बड़ा कारण यह भी है कि विद्यालय में उसे पढ़ने के लिए पाठ्यपुस्तक के अलावा और कुछ भी नहीं मिलता।

विगत कुछ समय में सबका ध्यान नन्हे पाठकों में पढ़ने के कौशल के विकास की ओर गया है। बाल साहित्य को लेकर आमजन में पसरी उदासीनता के रवैये में भी बदलाव आया है। बाल साहित्य का उपयोग न केवल भाषा की कक्षा में किया जा सकता है, बल्कि बाल साहित्य अन्य विषयों को सिखाने का भी रोचक माध्यम बन सकता है। बाल साहित्य में बच्चों की पसंद का सभी कुछ तो है- उनकी मनपसंद बातें, रंग-बिरंगे चित्र, कल्पना का अनूठा संसार। बस ज़रूरत है बाल साहित्य के झरोखे से बालमन को पहचानने की।

प्रस्तुत अंक में बाल साहित्य पर विशेष रचनाएँ दी जा रही हैं। आज हर अभिभावक चाहता है कि उनका बच्चा कहानी, कविताओं की किताबों की दुनिया की सैर करे। कुछ समय पहले तक बाल साहित्य को लेकर जो एक प्रकार की उदासीनता का सा माहौल था उसमें अब बदलाव आया है। पुस्तक मेलों के दौरान बच्चों की किताबों के स्टॉल में लगी भीड़ इसकी गवाह है। बाल साहित्य के प्रति जनसाधारण की जागरूकता को बयाँ कर रहा है लेख **बाल साहित्य-उदासीनता की बदलती रंगतें।**

आज हर अभिभावक चाहता है कि उसके बच्चे अपनी मनपसंद किताबें पढ़ें। हर स्कूल में भी पुस्तकालय है। लेकिन समस्या यह उठती है कि बच्चों के लिए किस प्रकार की किताबें चुनी जाएँ? इसी समस्या का समाधान कर रहा है लेख- **बच्चों के लिए कैसे चुनें किताब?** *बच्चे सृजनशील होते हैं। उनकी सहज अभिव्यक्ति किस प्रकार छोटी-छोटी कविताओं के रूप में सामने आती है, बाल साहित्य के झरोखे से नन्हे-मुन्ने क्या-क्या देखते हैं, वर्तमान में विभिन्न प्रकाशकों द्वारा किस प्रकार का बाल साहित्य सामने लाया जा रहा है, इन्हीं सबकी झलक मिलेगी लेख-* ***बाल साहित्य के झरोखे से*** *में। बाल साहित्य बच्चों को तो आनंदित*

करता ही है, शिक्षक भी कक्षा में सीखने-सिखाने के दौरान बाल साहित्य का उपयोग कर सकते हैं। कैसे? यह जानने के लिए पढ़िए लेख- **बाल साहित्य और भाषा शिक्षण।** *बच्चे रोचक कहानी कविताओं की किताबें पढ़ना चाहते हैं, लेकिन क्या हम उन्हें ऐसा माहौल दे पाते हैं? इस बात का जवाब दे रहा है लेख-* **क्यों दूर हैं बच्चे किताबों से।**

कितनी भी अच्छी किताबें हम कक्षा में क्यों न ले आएँ, लेकिन बच्चों का अगर शिक्षिका से स्नेहिल नाता न हो, तो बच्चे किताबों से दूर ही रहेंगे। शिक्षिका द्वारा दिया गया प्यार, आज़ादी, भरोसा बच्चों को शिक्षिका के पास लाएगा। वे निश्चिंत होकर आत्मविश्वास से किताबें पढ़ें इसके लिए कक्षा में पढ़ाने के साथ यह भी ज़रूरी है कि बच्चों को समझने का प्रयास किया जाए। इस अंक में विशेष लेख दिया जा रहा है- **बच्चों को समझने का करें प्रयास।** *बच्चों को कक्षा में भयरहित वातावरण मिलेगा तभी उनके स्वर मुखरित होंगे। पढ़ी गई किताबों पर भी वे बिना किसी झिझक के शिक्षक से तथा अपने साथियों से बातचीत करेंगे। किताबों की रोचक दुनिया में बच्चे ने एक बार प्रवेश कर लिया, तो उसे स्थायी पाठक बनते देर नहीं लगेगी। यही तो हम सब चाहते हैं।*

अकादमिक संपादक